शोध की गुणवत्ता बढ़ाने के कुछ सुझाव

अरविंद फाटक

उच्च शिक्षण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों का एक प्रमुख कार्य अनुसंधान है। इन संस्थाओं में किए गए अनुसंधान से ज्ञान का विस्तार तो होना ही है। समाज की अनेक समस्याओं को सुलझाने में भी सहायता मिलती है। विगत कुछ वर्षों में विश्वविद्यालयों से पीएचडी स्तर के शोधों में बहुत वृद्धि हुई है। विद्यार्थियों को पीएचडी के लिए मार्गदर्शकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। मुझे याद है 60 के दशक में उदयपुर में शिक्षा विषय में पीएचडी हेतु मार्गदर्शकों की संख्या केवल दो थी जो आज पचास के आसपास है। इन वर्षों में उपाधि हेतु किए जा रहे शोधों की संख्या में तो वृद्धि हुई है पर इनकी गुणवत्ता में कुछ गिरावट आई है। शोध या अनुसंधान की उपादेयता तभी हो सकती है जब उसकी गुणवत्ता अच्छी हो। इस लेख में शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु कुछ

सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ये सुझाव शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे शोधों को विशेष रूप से ध्यान में रखकर किए जा रहे हैं।

शोध का विषय चुनते समय काफी मेहनत करने की आवश्यकता होती है। शोधकर्ता को उसके क्षेत्र में किए गए शोध कार्यों का विस्तार व गहराई से अध्ययन करना चाहिए ताकि पता लग सके कि ऐसे कौन से क्षेत्र व प्रश्न हैं जिन पर बहुत कम कार्य हुआ है। अगर ऐसे क्षेत्र या प्रश्नों से संबंधित शोध समस्या ली जाय तो ज्ञान के विस्तार में विशेष मदद मिल सकती है। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में सामाजिक सरकारों, चुनौतियों, चिंताओं से संबंधित समस्याओं पर यदि शोध किया जाए तो वह समाजोपयोगी सिद्ध होगा। कम खर्चीली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मॉडल क्या हो? स्ट्रीट चिल्ड्रन की शिक्षा की प्रभावी व्यवस्था क्या हो सकती है, अध्यापकों के प्रोफेशनल इथीक्स, उच्च शिक्षण संस्थाओं का राजनीतिकरण आदि ऐसे विषय हैं जिन पर शोध होना चाहिए।

समाज में केवल सनसनी पैदा करने के लिए भी कुछ शोध किए जाते हैं जिनकी बहुत उपादेयता नहीं होती। जैसे यदि शोध कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाए कि परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु कक्षाओं में जाना जरूरी नहीं है या शेक्सपीयर के नाटक किसी और ने लिखे थे या वैवाहिक जीवन से लिव इन रीलेशनशिप अधिक उपयुक्त है।

सामाजिक विज्ञान में अनेक बार शोध द्वारा वस्तुस्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। उदाहरण के तौर पर देश के विभिन्न राज्यों में गरीबी की स्थिति, विगत दशकों में इसमें हुए परिवर्तन आदि। या राजस्थान के विभिन्न जिलों के विद्यार्थियों की कक्षा आठ में गणित में उपलब्धि व इसके आधार पर कौन से जिलों में उपलब्धि न्यूनतम हैं आदि। ये शोध भी उपयोगी हैं पर आवश्यकता ऐसे शोधों की है जो वस्तुस्थिति का केवल वर्णन नहीं कर वस्तुस्थिति को सुधारने का रास्ता भी बताएं। जो राज्य गरीबी की दृष्टि से बहुत पिछड़े हैं वहां गरीबी अत्यधिक क्यों है और क्या कदम उठाए जाएं जिससे गरीबी कम हो सके इस पर शोध की आवश्यकता है। या जो जिले ऐसे हैं जिनके विद्यार्थी गणित में कमजोर हैं उसका क्या कारण है और कैसे उनकी उपलब्धि बढ़ाई जाय इन पर शोध बहुत लाभप्रद हो सकता है।

शोधकर्ता जिस विषय पर शोध कर रहा है उसे उसकी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि पर गहराई से अध्ययन करना चाहिए व अपने शोध प्रतिवेदन में उसे इस पर विस्तार से चर्चा करनी चाहिए। आजकल शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शोध spiritual, Intelligence, Emotional Intelligence, Cognitive Style, Achievement, Motivation आदि पर हो रहे हैं। शोधकर्ता को पहले स्वयं इनकी अवधारणाओं को गहराई से समझना चाहिए, इससे संबंधित साहित्य को पढ़ना चाहिए वअपने शोध प्रतिवेदन में भी इन पर विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण लिखना चाहिए। कई बार शोधकर्ता आध्यात्मिकता व धार्मिकता में अंतर नहीं करता और जो उपकरणदत्त संकलन हेतु बनाता है उसमें इन दो अवधारणाओं में घालमेल कर देता है, जिससे शोध के परिणामों की शुद्धता प्रभावित होती है।

शोध की गुणवत्ता शोध जिस दत्त सामग्री पर आधारित है उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यदि जिस दत्त सामग्री पर आपके निष्कर्ष आधारित हैं वही विश्वसनीय नहीं है तो आपके निष्कर्ष भी विश्वसनीय नहीं होंगे। अतः जिन उपकरणों एवं प्रविधियों से दत्त संकलित किए जा रहे हैं उनकी गुणवत्ता, विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। कई बार शोधकर्ता बने बनाए उपकरण काम में ले लेता है जो कि एक पूर्णतः भिन्न जनसंख्या हेतु निर्मित किए जाते हैं और उनके सारे उद्देश्य शोधकर्ता के शोध से नहीं मेल खाते हों। अतः ऐसे उपकरणों को उपयोग में लेने से पूर्व इन तथ्यों की पूरी जांच करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त दत्त संकलन करने वाला भी दत्त संकलन के समय त्रुटियां कर सकता है जिससे दत्तों की विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है। अतः दत्त संकलनकर्ता

को दत्त संकलन करते समय पूर्ण सावधानी एवं प्रामाणिकता बरतनी चाहिए।

शोध की गुणवत्ता न्यादर्श के आकार एवं न्यादर्श चयन विधि पर भी निर्भर करती है। बहुत छोटे न्यादर्श पर निकाले गए निष्कर्ष व्यापक रूप से लागू नहीं होते। हां, कुछ अनुसंधान विधियां ऐसी हैं जिनमें छोटे न्यादर्श पर भी निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं और वे व्यापक रूप से वैध हो सकते हैं, उदाहरण के तौर पर यदि आप गहन केस स्टडी के आधार पर निष्कर्ष निकाल रहे हों तो न्यादर्श छोटा हो में भी कोई कठिनाई नहीं होती। फिर न्यादर्श कैसे चयन किया गया है या दृच्छिक पद्धति से या सोद्देश्य न्यादर्श है या सहूलियत की दृष्टि से न्यादर्श चुन लिया गया है। सहूलियत की दृष्टि से चुने गए न्यादर्श के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं उनकी विश्वसनीयता बहुत अधिक नहीं होती। इसलिए शोधकर्ता को अपने शोध प्रतिवेदन में न्यादर्श का चयन कैसे किया गया है व उसका आकार क्या है इसे विस्तार से लिखना चाहिए।

आजकल कई विषयों के शोधों में सांख्यिकी का प्रयोग काफी किया जाता है। इससे शोध निष्कर्षों की गुणवत्ता बढ़ती है बशर्ते सांख्यिकी का उपयोग सही ढंग से किया जाय। शोधकर्ता को एक बात ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है और वह यह है कि आप वही बात कहने के अधिकारी हैं जिनके प्रमाण शोध में उपलब्ध हों। देखा गया है कि कई बार शोधकर्ता प्रमाण आधारित तथ्य कहने के स्थान पर अपनी स्वयं की धारणाएं, मान्यताएं, सोच शोध निष्कर्षों में लिख देता है। इससे शोध की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

शोधकर्ता शोध के प्रारंभ में कुछ परिकल्पनाएं लेकर शोध प्रारंभ करता है। शोध में इन परिकल्पनाओं की जांच सही ढंग से होनी चाहिए एवं निष्कर्ष में यह उल्लेख होना चाहिए कि कौन सी परिकल्पनाएं सही पाई गई एवं कौन सी अस्वीकार की गई।

शोधकर्ता को अपने निष्कर्षों की तुलना इसी विषय पर किए गए अन्य शोधों के निष्कर्षों से भी करनी चाहिए और यदि कुछ शोधों के निष्कर्ष आपके शोध से भिन्न हैं तो इसका प्रामाणिकता से उल्लेख होना चाहिए।

शोधकर्ता को शोध निष्कर्ष निकालते समय वस्तुनिष्ठता रखनी चाहिए। तथ्यों, प्रमाणों के आधार पर जो बात स्पष्ट हो रही है उसे प्रामाणिकता से कहना चाहिए भले ही वह आपकी सोच से मेल न खाती हो। इसका अर्थ यह नहीं कि यदि प्रचलित एवं लोकप्रिय परिपाटी के प्रतिकूल निष्कर्ष आ रहे हों तो उन्हें न कहें। उन्हें निर्भीकतापूर्वक एवं स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्त करने का अधिकार शोधकर्ता को है, बल्कि उसका यह कर्तव्य भी है।